भा.वा.अ.शि.प.-हि.व.अ.सं.,शिमला द्वारा रा.व.मा.पा., व्युलिया में प्रकृति कार्यक्रम पर रिपोर्ट

Report on Prakriti Programme at GSSS Beolia by ICFRE-HFRI, Shimla

भा.वा.अ.शि.प.-हि.व.अ.सं.,शिमला द्वारा रा.व.मा.पा., व्युलिया में प्रकृति कार्यक्रम के अंतर्गत एक दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। संस्थान के निदेशक प्रभारी डॉ. संदीप शर्मा ने छात्रों को भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहारादून के एवं इसके अधीनस्थ विभिन्न संस्थानों और संस्थान की अनुसंधान और विस्तार गतिविधियों के बारे में बताया। संस्थान में आयोजित एक विशेष कार्यक्रम के दौरान डॉ. संदीप शर्मा ने छात्रों को भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून तथा इसके अधीनस्थ संस्थानों के बारे में बताया कि यह परिषद देशभर में वानिकी अनुसंधान, प्रशिक्षण, और शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभा रही है। इस परिषद के अंतर्गत चल रहे विविध कार्यक्रमों, अनुसंधान परियोजनाओं एवं विस्तार गतिविधियों का उद्देश्य न केवल वनों के सतत प्रबंधन को सुनिश्चित करना है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण, जैव विविधता की रक्षा और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करना भी है। उन्होने भा.वा.अ.शि.प.-हि.व.अ.सं.,शिमला की अनुसंधान गतिविधियों की विस्तृत जानकारी भी छात्रों प्रदान की। डॉ. शर्मा ने छात्रों को यह भी समझाया कि वनों और वृक्षों का हमारे जीवन में कितना महत्व है। उन्होंने कहा कि वृक्ष वातावरण में उपस्थित हानिकारक कार्बन डाई-ऑक्साइड को अवशोषित कर हमें शुद्ध ऑक्सीजन प्रदान करते हैं, जो जीवन के लिए अत्यावश्यक है। इसके अतिरिक्त, वृक्ष हमें ईंधन, चारा, फल, लकड़ी, औषधियाँ आदि अनेक प्रत्यक्ष लाभ प्रदान करते हैं, वहीं अप्रत्यक्ष रूप से ये जलवायु नियंत्रण, वर्षा में वृद्धि, मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने और जैव विविधता के संरक्षण में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वृक्षों के माध्यम से पर्यावरण संतुलन बनाए रखना संभव हो पाता है, जो आज के समय की महती आवश्यकता है। उन्होंने इस बात पर भी विशेष बल दिया कि पौधरोपण न केवल हरियाली बढ़ाने का माध्यम है, बल्कि यह मिट्टी के कटाव (भूमि अपरदन) को रोकने, उसे स्थिरता प्रदान करने और प्राकृतिक आपदाओं की रोकथाम में सहायक होता है। डॉ. शर्मा ने

छात्रों को नर्सरी विकसित करने की विभिन्न विधियों से अवगत कराया और उन्हें अपने विद्यालय परिसर में एक नर्सरी स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित किया, ताकि वे स्वयं वृक्षारोपण की प्रक्रिया से जुड़ सकें और उसे व्यवहारिक रूप से समझ सकें। श्री राजेन्द्र पाल तकनीकी सहायक ने पुराने पॉलिथीन बैग, सीमेंट के बोरे, प्लास्टिक की बोतलें और डिब्बों जैसी अनुपयोगी वस्तुओं का उपयोग करके बीज बोने की विधि का प्रायोगिक प्रदर्शन किया। इस क्रियात्मक सत्र के माध्यम से छात्रों को यह बताया गया कि कैसे हम अपशिष्ट पदार्थों का पुनः उपयोग कर पौधों की नर्सरी विकसित कर सकते हैं, जिससे पर्यावरण को भी कम से कम नुकसान हो। यह कार्यक्रम न केवल छात्रों के लिए शैक्षणिक रूप से लाभकारी रहा, बल्कि इसमें उन्होंने व्यावहारिक ज्ञान भी प्राप्त किया। साथ ही, उन्हें पर्यावरण संरक्षण की महत्ता का बोध हुआ और वे इसके प्रति अधिक जागरूक एवं जिम्मेदार नागरिक बनने की दिशा में प्रेरित हुए। कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों में प्राकृतिक संसाधनों के प्रति संवेदनशीलता उत्पन्न करना तथा उनमें हरित भारत के निर्माण में भागीदारी की भावना जागृत करना था, जिसमें यह पूर्णतः सफल रहा। कार्यक्रम के अंत में प्रधानाचार्या ने निदेशक महोदय एवं उनकी टीम का इस आयोजन हेतु धन्यबाद किया एवं छात्रों को दी गयी जानकारी को अपनी जीवन शैली में अपनाने एवं अपने आस पड़ोस में अन्य लोगो को भी जागरूक करने की सलाह दी। कार्यक्रम में शिक्षकों एवं छात्रों सहित 50 लोगों ने भाग लिया

कार्यक्रम की झलकियाँ :

****